E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2022; 4(3): 180-181
Received: 15-06-2022
Accepted: 18-07-2022

डॉ. रंजना ग्रेवर
सह–आचार्य, विभाग (संगीत), सी.एम.के. नेशनल पी.जी. गर्ल्ज कॉलेज, सिरसा, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
डॉ. रंजना ग्रेवर
सह–आचार्य, विभाग (संगीत), सी.एम.के. नेशनल पी.जी. गर्ल्ज कॉलेज, सिरसा, हरियाणा, भारत

एक दूसरे के पूरक 'नारी और संगीत'

डॉ. रंजना ग्रेवर

सारांश
विश्व – संगीत का इतिहास कलाकारों के संघर्ष का इतिहास है। कलाकार चाहे पुरूष हो या फिर महिला, ईश्वर की अद्भूत देन है। हमारा इतिहास सुसंस्कृत महिलाओं की कला–कृतियों से परिपूर्ण है। क्षेत्र चाहे कोई भी हो, महिलाओं ने उनमें प्रंशसनीय योगदान दिया है। इतिहास की तमाम शिकायतों, अत्याचारों और मजबूरियों के बोझ से दबी हुई महिला जब जीवन में कुछ स्थान हासलि कर लेती है, तो उसके लिए वह सचमुच ही एक महान उपलब्धि होती है। पुरूषों के लिए नारी को प्रेरणा–स्त्रोत माना गया है। नारी के लिए कला प्रेरणा का स्त्रोत है।

कूटशब्दः संगीत, संस्कृति, उपलब्धि, कलाकार

प्रस्तावना

सृष्टि के आरम्भ से आज तक नारी सुर नर मुनि को माता, पत्नी, प्रेयसी, गुरू व शिष्य आदि के रूप में प्रेरित करती आई है। माँ सरस्वती ज्ञान की आदि स्त्रोत हैं। यह अलग बात है कि श्री गणेश को प्रथम पूजा जाता है और उन्हें 'विद्यावारि धे बुद्धि–विघावा कहते हैं। यों तो श्री हनुमान को भी 'विद्ववान गुनी अति चातुर' माना जाता है, किन्तु मुख्य रूप से संगीत को तो एकमात्र देवी 'सरस्वती' ही है। वणिवादिनी ने नारद मुनि द्वारा तीनों लोको में संगीत के ज्ञान का प्रसार कराया। माँ सरस्वती का स्मरण संगीत से सम्बन्धित प्रत्येक कार्यक्रम के प्रारंभ में किया जाता है। तो नारी ही संगीत का प्रेरक शाम्बे मानी गई है।

नारी और संगीत प्रकृति और स्वभाव से एक दूसरे के निकट है। नारी सुलभ सौन्दर्य से जहाँ नारी ने जनमन को आकृष्ट किया हैं, वहीं अपनी भावपूर्ण मुद्रउपों से अनेक नृत्य–मांर्गकाओ की सृष्टि की है। नारी की सुकुमारता, मधुरता, सरसता और भावुकता संगीत की मृदुलता, मधुरता, रसोउत्पत्ति के अनुरूप है। नारी कंठ का माधुर्य और पद–चलन में अदाकारी तथा हाव–भाव प्रदर्शन की कला संगीत में गायन तथा नृत्य के लिए बहुत उपयोगी है।

नारी कंठ स्वभावतः मधुर माना गया है इसी के संदर्भ में भरत मुनि ने कहा है 'गान–क्रिया के सर्वथा योग्य नारी–कंठ ही है। यदि कोई पुरूष इस योग्य है भी, तो उसे अववाद स्वरूप ही समझना चाहिए। पुरूष के कंठ का रागिनी उतनी मर्मस्पर्शी और प्रभावशाली नहीं हो पाती, जितनी कि नारी कंठ से निःसृत रागिनी। निः संदेह नारी कंठ की बनावट प्रकृति से ही कुछ इस प्रकार की है, कि उससे निकले स्वर स्वतः मधुर और मोहक हो जाते हैं।

स्वर यंत्र विज्ञान के अनुसार नारी के कंठ में, पुरूषों की ही तरह स्वर–रज्जु पाई जाती है। किन्तु वे पुरूष की तरह विकसित नहीं होती। इसके अतिरिक्त महिलाओं के कंठ में स्वर–कोष ;टवबंसॅ.मेद्ध नहीं पाए जाते। हांलाकि पुरूषों की ध्वनि–उत्पादन क्षमता और परिसर महिलाओं की तुलना में अधिक विस्तृत होता है। बावजूद इसके इस तथ्य में सच्चाई है कि नारी का कंठ स्वभाविक रूप से पुरूषों से अधिक मधुर और कर्णाप्रिय होता है। यदि ऐसे कंठ को, संगीत साधना का उचित अवसर व ज्ञान प्राप्त हो जाए, तो सोने में सुहागा की स्थिति होगी।

नारी पृथ्वी की आदि–शक्ति है। अति प्राचीन काल से नारियां संगीत, साहित्य, प्रेम एवं भक्ति से आबद्ध रही है –

महाश्वेता एवं बंसतसे ना संस्कृत एवं साहित्य व संगीत की विदुषी थीं। ध्रुवस्वाकिनी संगीत–कला में निपुण थी। बुद्धकालीन उज्जविनी को महाराज चंड प्रघोत महासेन की पुत्री वासवदत्ता ने उद्यन से वीणा–वादन सीखकर संगति को समृद्धि प्रदान की। मगधराज की कामिनी विद्या–व्यसनी एवं कला–पारखी थी। शाणा में भी उनकी अबाध गति थी – वे स्वयं वीणा–वादन में कुशल थी। उन्होंने अपनी विदग्ध गति से देवराज इन्द्र के गुरू बृहस्पति और संगीत निपुण तुंबरू एवं नारद को लज़ा दिया था। वैशाली की नगरवधु आम्रपाली संगीत एवं नृत्य की साक्षात् प्रतिमूर्ति थी। बुद्धकालीन गणिकाएं संगीत–शिक्षा में प्रवीन थी। प्राचीन सामगान के साथ पृषि–पत्नियां वीणा बजाती थी। तानसेन की पुत्री सरस्वती वीणा वादन में सिद्धस्त थीं और कृष्ण भक्त मीरा ने तो संगीत को अपना

जीवन ही मान लिया था।

प्रथम व द्वितीय शताब्दी तक आते–2 संगीत उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग की महिलाओं में दिखाई देने लगा। मुगल काल में तो संगीत नारी–समाज से प्रायः दूरी ही हो गया, किन्तु राज्य वादियो व संगीत द्वारा जिवि कायार्गन करने वाली नारियों ने उसे अपने समाज में जिवित रखा।

ब्रिटिश काल में स्त्रियों को समाजिक बंधन के कारण संगीत–साधना का उचित अवसर प्राप्त न हो सका। उस समय संगीत–शिक्षक पुरूष ही थे। इसलिए जो स्त्री घर से बाहर न जा सकती थी, वह 'पर–पुरूष' से 'संगीत–शिक्षा' कैसे ले सकती थी। इसलिए केवल संगीत द्वारा धनोपार्जन करने वाली नारियों ने ही संगीत के अभ्यास जारी रखा व समाज के विरोध को सहते हुए भी संगीत कला का प्रदर्शन किया।

इस प्रकार वैदिक काल से अब तब संगीत क्षेत्र में नारियां, किसी न किसी रूप में योगदान देती आई है। कई महिला कलाकारों का निधन हो जाने के बाद, आज भी उनकी समृति श्रोताओं के मन को झकझोरती है। जिनमें रसूलबाई – बनरास की ठुमरी, टप्पा, दादरा गाने में निपुण थी, श्रीमति सिद्धेश्वरी देवी–किराना की प्रक्षपात गायिका, हीरा बाई बड़ोदकर – रत्पाल गायन व ठुमरी गायन व खास तौर पर भरी हुई सुरीली व दमदार आवाज के लिए प्रसिद्ध थी। गोहरजान – जो ख्याल, होली आदि की कुशल कलाकार थीं। इसी तरह तारा बाई शिरोड़कर, व केसरबाई केरकर इत्यादि कई अन्य नाम संगीत के क्षेत्र में अक्स्मिरणीय हैं। महिला गायिकाओं में बेगम–अख्तर का नाम अमर है। गजल–साम्राक्षी बेगम अख्तर के गाने का अन्दाज अनूठा था। गजल–गायकी व ठुमरी गायिकी की माहेर इस कलाकार ने संगीत को अग्रसर करने में अपना ही मकाम हासिल किया।

इस प्रकार वैदिक काल स`अब तक संगीत–क्षेत्र में नारियां, किसी न किसी रूप में योगदान देती रही है। नारी–वर्ग धन्य है, जिसकी संगीत–साधना विपरीत परिस्थितियों में भी पल्लवित होती रही व आज भी हो रही है। वर्तमान समय में – 'लता जी', गंगूबाई हंगल, श्री मती एम0एस0 सुब्बालक्ष्मी, गिरीजा देवी, किशोरी अमोनकर, परवनि सुल्ताना, प्रभा–अत्रे, श्रीमति लक्ष्मी शंकर, शोभा गुर्टू, श्री मति सुलोचना, बृहस्पति, निर्मला–अरूण, श्रीमति मणिक वर्मा, सुन्नदा पटनायक, डॉ. श्रीमति एन् राज्म, शरण रानी, जरनि दारूवाला, यागिनी कृष्णमूर्ति, हेमामालिनी तथा अन्य कई महिलाओं के नाम उल्लेखनीय है।

नारी! जिसे हमारा साहित्य भी त्याग, सहनशीलता और क्षमा की शाश्वत मूर्ति कह कर महिमा प्रदान करता है, नारी के ये गुण, कुछ और नहीं, एक लम्बे ऐतिहासिक दमन के विश्वातापूर्ण परिणाम है। यहां एक बात और कहना चाहूंगी, कि संगीत की सफलता के लिए बहुत ही आवश्यक है, त्याग, कठिन तपस्या यानि अभ्यास, एवं सुर की अग्नि में स्वयं को होम कर देना।

आज के समय में नारी की संगीत–साधना के क्षेत्र में आने वाली सार्वजनिक समस्याओं के अतिरिक्त कुछ अपनी निजी समस्याएं भी है। नारी चाहे विवाहित हो या अविवाहिता, गृहस्थी उनकी साधना में, जीवन में किसी न किसी, समय व्यवधान बनती है। यदि विवाह से पूर्व इस क्षेत्र में प्रगति हो जाए तो क्या वह अपनी साधना को सतत् बना सकती है? यहां एक बहुत बड़ा प्रश्न – चिन्ह लग जाता है। कई महिलाएं जो विवाह से पूर्व संगीत के क्षेत्र में अपना स्थान बना चुकी होती है, विवाहोपरांत उन्हें केवल गृहिणी बन कर संतोष कर लेना पड़ा है।

समस्याएं तो रहेगी व संघर्ष भी होगा, किन्तु दृढ़ संकल्प शक्ति से प्रतिकूल परिस्थितियों पर विजय पाई जा सकती है। जिस प्रकार पहाड़ी नदी अपने तीव्र वेग से असंख्य पाषाणों को बहाती हुई, गंतव्य की ओर अविरल प्रवाहित होती चली जाती है, उसी प्रकार महिलाओं को भी संगीत साधना में आने वाले विभिन्न व्यवधानो को पार करते हुए, व दृढ़ निश्चय रूपी वेग से बहाते हुए, संगीत की अजस्त्र धारा को अक्षुषण बनाए रखना है।

संदर्भ

1. डॉ. लक्ष्मीनारायण, निबंध संगीत
2. पंडित अहोबल, संगीत परिजात
3. डॉ. सोमनाथ, रागाविभोध
4. अमिता शर्मा, शास्त्रीय संगीत का विकास
5. डॉ. मधुबाला सक्सेना, संगीत मधुबन